बालोदय दीर्घाओं को देख कर अभिभूत हुए डॉ. कलाम

कहा– शिक्षा में सृजनशीलता, नैतिकता एवं अध्यात्म का समावेश आवश्यक

राजसमन्द, 23 जुलाई 2011

''सपने देखने वाले ही आगे बढ़ते हैं क्योंकि सपनों से विचार बनते हैं, विचार से क्रिया का जन्म होता है, क्रिया से व्यवहार बनता है और व्यवहार ही इंसान की पहचान है। जैसा इंसान होगा, वैसा ही समाज एवं राष्ट्र का निर्माण होगा। ऐसा ही सपना अणुविभा के संस्थापक मोहनलाल जैन ने साकार किया है जो शिक्षा व नैतिक मूल्यों के समन्वय की जीवन्त प्रयोगशाला है।'' पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने ये विचार अणुव्रत विश्व भारती में आयोजित 'वर्तमान शिक्षा पद्धति बनाम् नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि बालकों में ऐसा साहस होना चाहिये कि वे स्वयं के विकास का मार्ग पहचान सके, उसे खोजपूर्ण तरीकों से विकसित कर सके। उन्होंने रचनात्मकता, तेजस्विता और साहस को ज्ञानार्जन का मूल मंत्र बताया।

संगोष्ठी में उपस्थित शिक्षकों से डॉ. कलाम ने आग्रह किया कि शिक्षा में सृजनशीलता एवं नैतिक मूल्यों का सम्मिश्रण हो। शिक्षक अपने ज्ञान को बालकों पर थोपे नहीं वरन बालक की रुचि एवं जिज्ञासा के अनुरूप उनका पथ प्रशस्त करें। डॉ. कलाम ने राष्ट्रीय नैतिकता के विभिन्न आयामों की स्थापना हेतु परिवार एवं समाज को भी उत्तरदायी बताया क्योंकि अभिभावकों के गुण ही बालकों में परिलक्षित होते है। डॉ. कलाम ने अपने वक्तव्य के सारांश में कहा कि शिक्षा वास्तव में सत्य को आत्मसात करना है। शिक्षा, ज्ञान और अध्यात्म का अनन्त सफर है जो कि मानवता के विकास में 'माइल स्टोन' की तरह है। सही शिक्षा ही मानवता की पहचान है जो उसके आत्मसम्मान को बढ़ाती है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ डॉ. कलाम द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। अणुविभा के अध्यक्ष टी. के. जैन ने स्वागत भाषण दिया। अणुविभा के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. एस.एल. गांधी ने अणुविभा की स्थापना के उद्देश्य और इतिहास पर प्रकाश डाला एवं नई पीढी में नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों के विकास की दिशा में अणुविभा द्वारा किए जा रहे प्रयासों को रेखांकित किया।

डॉ. कलाम का प्रातः अणुव्रत विश्व भारती पहुंचने पर अणुविभा पदाधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं ने माल्यार्पण एवं तिलक द्वारा स्वागत किया। श्री टी. के. जैन, डॉ. एस.एल. गांधी एवं संचय जैन ने डॉ. कलाम को 'चिल्ड्रन्स पीस पेलेस' स्थित विभिन्न कक्षों व दीर्घाओं का अवलोकन कराया जहाँ अनेक विद्यालयों से आए विद्यार्थी बालोदय शिविर के अन्तर्गत बहुविध गतिविधियां में सहभागिता कर रहे थे। डॉ. कलाम ने सर्वप्रथम तुलसी अणुव्रत दर्शन, महाप्रज्ञ अहिंसा दर्शन का अवलोकन किया एवं यहां प्रदर्शित प्रेरक चित्र प्रदर्शनी व योगा मोड्ल्स को देखा।

इसके बाद डॉ. कलाम ने विश्व दर्शन दीर्घा, पुस्तकालय व विज्ञान कक्ष का अवलोकन किया। यहाँ उन्होंने विज्ञान के विभिन्न प्रयोगों को रुचिपूर्वक देखा एवं बच्चों से संवाद किया। संग्रहालय, गुड़ियाघर, महापुरूष जीवन दर्शन आदि कक्षों के द्वारा बच्चों में किस प्रकार मूल्य बोध विकसित किया जाता है, इसे डॉ. कलाम ने गहराई से समझा। बच्चों का जीवन विज्ञान कक्ष में महाप्राण ध्वनि करते हुए डॉ. कलाम कुछ क्षणों तक मंत्रमुग्ध होकर देखते रहे।

अन्त में डॉ. कलाम बाल संसद पहुंचे जहां बच्चों की मोक पार्लियामेण्ट चल रही थी। यहां कलाम बच्चों की अन्तिम पंक्ति में चुपचाप बैठ गये एवं बाल संसद की पूरी कार्यवाही को देखा, सवाल–जवाब और बहस सुनते रहे। बाल–संसद में शान्तिपूर्ण–अनुशासित वातावरण का जिक्र अपने उद्‌बोधन में करते हुए उन्होंने कहा कि काश! देश की संसद में भी ऐसी शान्ति स्थापित हो जाए। बालोदय दीर्घाओं को देखकर डॉ. कलाम अभिभूत थे और उन्होंने कहा कि बच्चों के विकास के लिए एक अद्‌भूत केन्द्र है।

डॉ. कलाम ने इस अवसर पर 'स्कूल विद ए डिफरेन्स' प्रायोजना के शुभारम्भ की अपने हस्ताक्षर कर विधिवत घोषणा की। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह प्रायोजना शिक्षा में नैतिक मूल्यों की स्थापना का सशक्त माध्यम बन सकेगी। बालमुकुन्द सनाढ्य, प्रकाश तातेड़ एवं नरेन्द्र निर्मल ने योजना का घोषणा पत्र डॉ. कलाम को प्रस्तुत किया। उल्लेखनीय है कि विद्यालयों में शान्ति व अहिंसा की संस्कृति विकसित करने के उद्देश्य से तैयार की गई यह प्रायोजना राजसमन्द के 50 विद्यालयों में प्रारम्भ की जा रही है।

कार्यक्रम का संचालन अणुविभा के महामंत्री संचय जैन ने किया। इस कार्यक्रम में अणुव्रत बालोदय के अध्यक्ष हंसमुख मेहता, कार्याध्यक्ष बालोदय सुरेश कावड़िया, जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. राकेश तैलंग सहित अनेक गणमान्य नागरिक एवं अधिकारी उपस्थित थे। अणुविभा के उपाध्यक्ष नरेश मेहता ने साहित्य भेंट किया, अणुव्रत बालोदय के उपाध्यक्ष गणेश कच्छारा ने स्मृति चिह्न प्रदान किया, उपाध्यक्ष जगजीवन चौरड़िया व मंत्री अशोक डूंगरवाल ने मेवाड़ी पगड़ी व उपरना भेंट कर डॉ. कलाम स्वागत किया। श्रीमती प्रकाशदेवी तातेड़, बाबुलाल राठोड़ एवं रमेश बोहरा ने माल्यार्पण कर स्वागत किया।

निवेदकः

विमल जैन

झलकियाँ

- अणुव्रत विश्व भारती में डॉ. कलाम जब बालोदय दीर्घाओं का अवलोकन कर रहे थे तब रिमझिम बारिश शुरू हो गई। गार्ड ने उनके उपर छाता ताना तो डॉ. कलाम छाता अपने हाथ में थाम चलने लगे। इस वाकये को देख वहाँ उपस्थित हर व्यक्ति डॉ. कलाम की सरलता का कायल हो गया।

- जब डॉ. कलाम बालोदय दीर्घाओं का अवलोकन कर रहे थे तब 'चिल्ड्रन्स पीस पेलेस' में आयोजित दो दिवसीय बालोदय शिविर में आए 15 विद्यालयों के 135 बच्चे अलग–अलग कक्ष–दीर्घाओं में बहुविध रचनात्मक प्रवृत्तियों में भाग ले रहे थे। डॉ. कलाम आत्मीयता के साथ बच्चों से मिले, प्रश्न पूछे ओर बच्चों की जिज्ञासाओं का भी समाधान दिया।

- अणुव्रत विश्व भारती में अपने ढाई घण्टा के प्रवास के दौरान डॉ. कलाम ने लगभग 100 से भी अधिक ऑटोग्रॉफ दिए। आयोजकों व अधिकारियों को समय की चिन्ता सताती रही किन्तु डॉ. कलाम कतई जल्दी में नहीं थे। उन्होंने किसी को निराश नहीं किया फिर भी जो वंचित रह गए उनके लिए अपने भाषण के अन्त में उन्होंने अपनी वेबसाइट का पता दिया और कहा कि आपको फोटोग्राफ के साथ ऑटोग्राफ भेजूँगा।

- बाल–संसद में बच्चों की मॉक पार्लियामेण्ट चल रही थी। डॉ. कलाम बच्चों के साथ अन्तिम पंक्ति में बैठ गए और कार्यवाही देखने लगे। उन्होंने लोकतंत्र के महत्व बनाम दुर्दशा पर चल रही बहस को ध्यान से सुना। यहाँ के वातावरण और अनुशासन का जिक्र डॉ. कलाम ने अपने भाषण में भी किया और भारत की संसद में भी ऐसे ही माहौल की आवश्यकता बताई।

- डॉ. कलाम ने अणुविभा के संस्थापक मोहनभाई को 'महान् व्यक्तित्व' कह कर सम्बोधित किया। जब मोहनभाई को शाल ओढ़ाकर सम्मानित करने की उद्घोषणा हुई तो मोहनभाई को संकुचाते देख डॉ. कलाम स्वयं कुर्सी से उठ कर स्टेज के किनारे बनी सीढियों तक पहुँच गए। डॉ. कलाम की सरलता देख सभी गद्गद् हो गए और पूरा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा।

- डॉ. कलाम ने अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ व आचार्य महाश्रमण का अपने उद्बोधन में कई बार जिक्र किया और कहा कि अणुव्रत के सिद्धान्त सम्पूर्ण विश्व को दिशा दे सकते हैं। डॉ. कलाम ने मोहनभाई के योगदान का भी कई बार जिक्र किया।

- महाप्रज्ञ अहिंसा दर्शन में जब उन्हें बताया गया कि यहाँ अहिंसा के तीन महान् दूत भगवान महावीर, महात्मा गाँधी और आचार्य महाप्रज्ञ के दर्शन को कलात्मक चित्रों में दिखाया गया है तो वे बड़े प्रभावित हुए एवं अपने साथ आए युवक को बुला कर पूछा कि अहिंसा के तीन पुजारी कौन–कौन हैं? वह युवक भगवान महावीर और भगवान बुद्ध का नाम लेकर रूक गया तो डॉ. कलाम ने कहा– ''मैं तुम्हें सौ में से पचास नम्बर ही दूँगा।'' फिर डॉ. कलाम ने **महावीर, महात्मा और महाप्रज्ञ** के इस सुंदर संयोग के बारे में उसे बताया और इसे याद रखने को कहा।

- बालोदय पुस्तकालय में एक नन्ही–सी बच्ची डॉ. कलाम के पास आई और बोली–''मैं आप के जैसा बनना चाहती हूँ, आप बताएँ कैसे बनूँ? चारों तरफ का

माहौल देख कर मैं कन्फ्यूज हो जाती हूँ।'' डॉ. कलाम उसकी मासूमियत देख कर मुसकुराने लगे और बोले– ''दृढ निश्चय रखो, तुम जो चाहो वह बन सकती हो।''

- डॉ. कलाम ने बालोदय दीर्घाओं के अवलोकन के पश्चात सम्मति पुस्तिका में लिखा– ''ग्रेट क्रियेशन''।

- डॉ. कलाम को देखने, उनसे हाथ मिलाने व ऑटोग्राफ लेने का जुनून हर किसी पर सवार था वहीं प्रेस फोटोग्राफर्स में उन्हें कैमरे में कैद करने की होड़ लगी थी। अवलोकन के दौरान डॉ. कलाम ने 'विश्व मैत्री अतिथिगृह' के एक कमरे में प्रवेश किया तो दो फोटोग्राफर दौड़ कर पहले ही अन्दर चले गए। डॉ. कलाम ने प्यार भरी एक झिड़की के साथ उन्हें बाहर भेजा क्योंकि उन्हें टॉयलेट का उपयोग करना था।

- डॉ. कलाम पहली रात्रि को ही राजसमन्द पहुँच गए थे। अणुव्रत विश्व भारती से मात्र 200 मीटर की दूरी पर सर्किट हाउस में उनके ठहरने की व्यवस्था थी। अणुविभा के अध्यक्ष श्री टी के जैन, अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सोहनलाल गाँधी और महामंत्री श्री संचय जैन लगभग पौन घण्टा डॉ. कलाम के साथ रहे। अणुव्रत, चिल्ड्रन्स पीस पेलेसए राजसमन्द झील, मार्बल खनन से प्रभावित हो रहे पर्यावरण सहित अनेक मुद्दों पर चर्चा हुई। इस दौरान राजसमन्द कलक्टर डॉ. प्रीतम बी यशवन्त व पुलिस अधीक्षक डॉ. नितिन ब्लगन भी मौजूद थे।

- अणुव्रत दीर्घा में अणुविभा के शिलान्यास की घटना पर आधारित पेन्टिंग में मोहनभाई का चित्र देख डॉ. कलाम बोले– ''इनका चित्र यहाँ क्यों लगा रखा है?'' वहाँ उपस्थित लोग डॉ. कलाम का तात्पर्य समझ पाते इसी बीच वे आगे बोल उठे– ''इनका चित्र को प्रवेश द्वार पर होना चाहिए।''

SCHOOL WITH A DIFFERENCE
A project to develop the spirit of a culture of peace and nonviolence in schools
COMMITMENTS
1 Value Based Education
2 Free of Addiction, Smoking and Drugs
3 Free of Corporal Punishment
4 Eco - Friendly Environment
5 Clean and Neat Campus
6 Dignity in Behaviour
7 Commitment for the Society and the Nation
I declare the launch of the project
'School with a Difference'
with a hope that it will bring a behavioural change in the lives of students.
APJ ABDUL KALAM

Dialogue on
Spirituality
ACHARYA

ANUVIBHA

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव

Dialogue on

Spirituality and Science

DR. APJ ABDUL KALAM

ACHARYA MAHASHARMAN JI

Bisleri